तत्त्वार्थसूत्र अध्याय ५, सूत्र ३८/४२

मोक्ष मार्गस्य नेतारं, भेत्तारं कर्मभूभृताम् |

ज्ञातारं विश्वतत्त्वानां वंदे तद्गुणलब्धये ||

Class 43

तत्त्वार्थ सूत्र ग्रंथराज में पंचम अध्याय के सूत्रों के माध्यम से द्रव्य और उसके स्वभाव का वर्णन चल रहा है, पुद्गलों में किस तरह से परिणमन होते हैं, कैसे उनके बन्ध होते हैं, ये सब बताया जा चुका है, आगे प्रकरण अब समाप्ति की ओर है, द्रव्य की परिभाषाएँ पहले भी बताई गई हैं, द्रव्य का लक्षण पहले बताया गया है। यहाँ पर द्रव्य क्या है? ये बताया जाने वाला है। -

गुण-पर्ययवद् द्रव्यम् **||5.38||**

द्रव्यों के गुणों और स्वरूप का वर्णन**:-**

द्रव्य वह होता है जो गुण और पर्याय दोनों को धारण करता है। वद् शब्द वत् प्रत्यय संस्कृत का वान अर्थ में आता है, जिसे हम वाला बोलते हैं, गुण और पर्याय वाला द्रव्य होता है, या गुण और पर्यायवान द्रव्य होता है यानि द्रव्य में गुण भी अवश्य होंगे और पर्यायें भी अवश्य होंगीं। गुण और पर्यायों का जो पिंड है, आधार है उसी का नाम द्रव्य है। यह द्रव्य एक तरह से सामान्य रूप होता है और द्रव्य के साथ में जो गुण और पर्यायें होती हैं इन्ही से द्रव्य की विशेषता को जाना जाता है। ऊपर के सूत्रों में जो सद्द्रव्य लक्षणम्। उत्पादव्ययध्रौव्य युक्तं सत्। इत्यादि जो सूत्र थे इनमें द्रव्य का लक्षण तो बताया, लेकिन द्रव्य का स्वरूप नहीं बताया था। लक्षण अलग चीज है और स्वरूप अलग चीज है। जीव का स्वरूप क्या है और जीव का लक्षण क्या है? जैसे इन दोनों में अंतर होता है वैसे ही जीव के स्वरूप के साथ साथ पुद्गल का स्वरूप क्या, पुद्गल का लक्षण क्या? तो स्वरूप वह होता है, जो हमेशा त्रैकालिक उसकी परिणति के रूप में दिखाई देता है। लक्षण वह होता है, जो स्वरूप को बनाए रखता है, तो द्रव्य का ये लक्षण बताया था पहले, कि द्रव्य सत् लक्षण वाला है। सत्ता कैसे बनती है? तो उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य के माध्यम से बनती है, लेकिन यहाँ बताया जा रहा है कि द्रव्य किसको धारण करता है उसका स्वरूप क्या? तो गुण और पर्याय वाला होना ये द्रव्य का स्वरूप है।

जीव का स्वरूप क्या? तो जीव के स्वरूप में बहुत सारी चीजें आ जाती हैं, जीव अपने स्वाभाविक परिणमन के साथ भी होता है वैभाविक परिणमन के साथ भी होता है, जीव संकोच विस्तार स्वभाव वाला

भी होता है, जीव अमूर्तिक भी होता है, मूर्तिक भी होता है ऐसा इसका स्वरूप कहलाएगा; लेकिन लक्षण उसका एक ही होगा, उपयोगो लक्षणम्| इसी तरीके से यहाँ पर द्रव्य का ये स्वरूप बताया जा रहा है, द्रव्य गुण वाला भी होता है, पर्याय वाला भी होता है। गुण भी बहुत से होते हैं और पर्यायें भी बहुत सी होती हैं। गुणों का संबंध द्रव्य के साथ हमेशा बना रहता है और गुण जो व्याख्यायित किए जाते हैं वह पर्यायों के साथ भी व्याख्यायित होते हैं, जैसे जो पर्यायें है तो पर्यायें किसकी हैं? तो पर्यायें द्रव्य की भी होती हैं और पर्यायें गुण की भी होती हैं। तो जब हम गुणों की चर्चा करते हैं तो सामान्यतया एक सामान्य गुण आ जाते हैं और एक विशेष गुण आ जाते हैं। सामान्य गुणों में जब हम देखते हैं, तो अस्तित्व, वस्तुत्व, द्रव्यत्व, प्रमेयत्व, प्रदेशवत्व, अगुरुलघुत्व ये सामान्य गुण हो जाते हैं। छह ये सामान्य गुण हैं जो सभी द्रव्यों में पाए जाते हैं| जब हम हर द्रव्य की विशेषता के साथ में गुणों को देखेंगे तो हर द्रव्य के गुण अपने छह गुण हैं; लेकिन अगर हम विशेष गुण जानेंगे तो जीव के विशेष गुण और भी अधिक हो जाएँगे,

सामान्य गुण अस्ति स्वभाव को धारण करते हैं

सामान्य गुणों के बारे में तो सब जानते ही हैं। अस्तित्व का मतलब होता है, जिससे की द्रव्य हमेशा अपने अस्ति स्वभाव को धारण करता है। उसकी अपनी सत्ता बनी रहती है, अस्तित्व बना रहता है, ये उसके अंदर अस्तित्व गुण के कारण से होता है। वस्तुत्व गुण होता है जो इस द्रव्य के सामान्य और विशेष दोनों धर्मों को लेकर चलता है। वस्तु में सामान्यपना भी होता है और विशेषपना भी होता है। इन दोनों को जो साथ में लेकर के चले, वह वस्तुत्व गुण कहलाता है। द्रव्यत्व गुण होता है जिसके कारण से वह अपनी अनेक पर्यायों को प्राप्त करता रहता है और वह अनेक पर्यायों को प्राप्त करता हुआ भी अपने द्रव्य स्वभाव को कभी छोड़ता नहीं, ये उसके द्रव्यत्व गुण के कारण से होता है। प्रमेयत्व गुण होता है जिसके कारण से वह किसी ना किसी ज्ञान के द्वारा अवश्य जाना जाता है। वह ज्ञान का विषय बनता है, वह ज्ञेय रूप होता है, प्रमेय रूप होता है, इसलिए वह प्रमाता या प्रमाण का विषय बनता है, उसको प्रमेयत्व गुणों के माध्यम से कहा जाता है। प्रदेशत्व गुण होता है जिसके कारण से वह अपने प्रदेशों को धारण करता है। क्षेत्र इसका जितना घेरता है जो बताया गया, संख्यात प्रदेशी, असंख्यात प्रदेशी, अनंत प्रदेशी ये सब उसके प्रदेशत्व गुण में आता है और अगुरुलघुत्व गुण होता है, जिसके माध्यम से वह प्रति समय षटगुणी हानि-वृद्धि के रूप में अपनी ही अंदर स्वाभाविक परिणमन को धारण किए रहता है यह उसके सामान्य छह गुण होते हैं जो प्रत्येक द्रव्य में पाए जाते हैं, चाहे वह शुद्ध द्रव्य हो, चाहे अशुद्ध द्रव्य हो और शुद्ध द्रव्यों में भी जो धर्म, अधर्म, आकाश, काल हैं इसमें भी पाए जाते हैं और अशुद्ध द्रव्य जो हो जाते हैं, जीव और पुद्गल इनमें भी वह हमेशा पाए जाते हैं।

इन छह गुणों के अलावा जो विशेष गुणों का व्याख्यान आता है, तो विशेष गुण सबके अपने अलग अलग भी होते हैं। जीव द्रव्य के अगर आप विशेष गुण देखेंगे तो उसमें दर्शन, ज्ञान, सुख, वीर्य, ये उसके विशेष

गुण होंगे। जीव के अंदर, दर्शन गुण होना, ज्ञान गुण होना, सुख गुण होना, वीर्य गुण होना ये उसका क्या है? ये उसकी विशेषता है इसके साथ साथ चेतनत्व होना, अमूर्तत्व होना ये उसके विशेष गुण हैं। पुद्गलों के जब हम विशेष गुणों की बात करेंगे तो उसमें स्पर्श, रस, गंध, वर्ण और उसके साथ में अचेतनत्व होना, मूर्तत्व होना, ये उसके विशेष गुण हो जाएँगे। धर्म द्रव्य के जब हम विशेष गुणों की बात करेंगे तो गति, परिणाम में हेतु होना, उसके साथ साथ अचेतनत्व होना, अमूर्तत्व होना, ये उनका विशेष गुण होगा। अधर्म द्रव्य का जब हम विशेष गुण देखेंगे, तो स्थिति में हेतु होना और उसके साथ साथ अचेतनत्व होना और अमूर्तत्व होना, ये अधर्म का विशेष गुण हो गया, आकाश का भी इसी तरह विशेष गुण उसमें अवगाहनत्व गुण होना, साथ में अचेतनत्व होना और अमूर्तत्व होना। काल का भी विशेष गुण जैसे उसमें वर्तना में निमित्त होना, अचेतनत्व होना, अमूर्तत्व होना, ये उसके विशेष गुण हो जाते हैं, तो इस तरह से सामान्य और विशेष गुणों को जान करके हम गुणों के बारे में समझ सकते हैं।

द्रव्य की पर्यायों का वर्णन:-

गुण और पर्याय को जब हम समूचा देखते हैं, तब वो द्रव्य की परिणति ले आता है और द्रव्य जो है, अपने अंदर पर्यायों को भी धारण करता है और वो पर्यायें भी कई प्रकार से व्याख्यायित की जाती है। मुख्य रूप से अर्थ पर्याय, व्यंजन पर्याय। अर्थ पर्याय भी दो प्रकार से बताई जाती है - स्वभाव अर्थ पर्याय, विभाव अर्थ पर्याय। जब स्वभाव अर्थ पर्याय की बात आती है तो जो अगुरुलघु गुण के माध्यम से षटगुणा हानि रूप जो परिणमन चल रहा है वह उसका स्वभाव अर्थ पर्याय कहलाती है। विभाव अर्थ पर्याय होगी वो केवल जीव द्रव्य में ही ये विभाव अर्थ पर्याय बताई जाती है, जो मिथ्यात्व, कषाय, राग, द्वेष, पुण्य और पाप के भेद से छह प्रकार की होती है, इसी तरीके से विभाव अर्थ पर्याय के साथ साथ व्यंजन पर्यायें भी होती हैं और व्यंजन पर्यायें भी द्रव्य की भी होती हैं और गुणों की भी होती हैं। स्वाभाविक भी होती हैं और वैभाविक भी होती हैं, जो स्वभाव भूत पर्यायें होगीं, जैसे हम कहे स्वभाव द्रव्य व्यंजन पर्याय, तो व्यंजन पर्याय वह है जो बहुत काल संबंधी हो, स्वभाव द्रव्य व्यंजन पर्याय जीव की स्वभाव द्रव्य व्यंजन पर्याय क्या कहलाएगी, तो जैसे जीव की जो सिद्ध शुद्ध पर्याय है वह जीव की स्वभाव द्रव्य व्यंजन पर्याय है, द्रव्य की उस रूप में परिणति हो गई, इसलिए वो द्रव्य की व्यंजन पर्याय है,

अगर हम कहे जीव की स्वभाव भूत गुण व्यंजन पर्याय कौनसी होगी? तो व्यंजन पर्याय जो बहुत समय वाली हो, अब गुण के साथ जोड़ दी व्यंजन पर्याय, तो गुण जो ज्ञान आदि गुण होते हैं, तो केवल ज्ञानमय होना, केवल दर्शनमय होना, अनंत सुखमय होना ये जीव की स्वाभाविक गुण व्यंजन पर्याय कहलाएगी, इस तरह से द्रव्य की स्वभावभूत भी व्यंजन पर्याय होती हैं और वैभाविक भी होती है। जब विभाव रूप व्यंजन पर्याय की बात आएगी, विभाव रूप द्रव्य व्यंजन पर्याय कैसी? जैसे जीव की जो मनुष्यादि पर्यायें हैं ये उसकी विभाव द्रव्य व्यंजन पर्याय हैं, ये द्रव्य की परिणतियाँ हैं। द्रव्य हमें जो अनेक प्रकार के

आकारों में दिखाई देता है, त्रिकोण, गोल, सम चतुरस्र संस्थान इत्यादि ये सब द्रव्य की पर्यायें ये सब उसकी व्यंजन पर्यायें होती हैं और ये अनेक पुद्गल अणुओं से मिलकर के बनी हैं, इसलिए विभाव रूप कहलाती हैं। जीव की इसलिए कहलाएगी, क्योंकि मनुष्यादि पर्यायें जीव ने धारण की है इसलिए जीव की विभाव व्यंजन पर्यायें हैं और इसी तरीके से जीव की विभाव गुण व्यंजन पर्याय भी होती हैं, जैसे की जीव के अंदर जो मतिज्ञानादि गुण हैं, श्रुतज्ञानादि गुण हैं, जो इसके ये सभी वैभाविक गुण माने जाते हैं, क्योंकि ये सभी गुण उसके जो व्यंजन पर्यायों को धारण कर रहे हैं ये छूट जाते हैं, ये स्वभाव भूत नहीं है, इसलिए मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यय ज्ञान ये सब क्या हैं? ये विभावरूप गुण व्यंजन पर्याय हैं।

आचार्यो ने द्रव्य और गुणों की पर्यायों को अनेक तरह से समझाया है:-

बहुत सारा विस्तार कई तरीके से हो सकता है पर्यायों का, स्वभाव पर्याय के रूप में, विभाव पर्याय के रूप में, अर्थ पर्याय के रूप में, व्यंजन पर्याय के रूप में, एक और तरीका भी बताया जाता है, समान जाति पर्यायें और असमान जाति पर्यायें, तो विभाजन करने के लिए कई तरीके हो सकते हैं, समझाने के कई तरीके हो सकते हैं आपको कोई सा भी तरीका पसंद आए, वो एक भी तरीका आप अपने दिमाग में रख सकते हैं। स्वभाव, विभाव पर्यायों के भेद से भी पर्यायों को जाना जा सकता है, अर्थ व्यंजन पर्यायों के भेद से भी पर्यायों को जाना जा सकता है और समान जाति, असमान जाति, समान जाति कैसी होती हैं? जैसे पुद्गल के जो अणु मिल जाते हैं, अणु मिल करके जो स्कंध बन जाते हैं, तो हैं सभी पुद्गल ही, तो पुद्गल से पुद्गल मिल गया, अणु से स्कन्ध बन गए, तो ये समान जाति वाले ही पर्याय कहलाएगी। ये असमान जाति पर्याय क्या कहलाती है? जैसे जीव की जो मनुष्यादि ये जो पर्यायें हैं, चार गति रूप जो पर्यायें हैं, ये असमान जाति हैं क्योंकि इसमें जीव की भी परिणति है और साथ में पुद्गल की भी परिणति है। शरीर भी बना है मनुष्य का, तो जीव के निमित्त से बना है, तो इसमें जीव का भी योगदान है और पुद्गल का भी योगदान है, तो ये असमान जाति पर्याय कहलाएगी। इस तरह से अनेक तरह का विभाजन करके आचार्यों ने समझाने की कोशिश की है कि हम पर्यायों को भी समझें, कि पर्याय द्रव्य की भी होती हैं और पर्याय गुणों की भी होती हैं, जब गुणों की बात आएगी तो जैसे जीव के जो ज्ञानादि गुण हैं, उन गुणों की परिणतियाँ जो होंगी वो उस गुण की पर्याय कहलाएगीं। ज्ञानगुण की मतिज्ञान, श्रुतज्ञान आदि ये पर्याय हो गईं। यहाँ तक की केवलज्ञान भी जो है ज्ञान गुण की पर्याय है, उसकी ही एक परिणति है, है ना, दर्शन गुण की, सुख गुण की ये सब अपनी अपनी परिणतियाँ है जिस तरह से वो गुण अपना बदलाव लाता है, बदलता रहता है, उसी तरीके से उसकी पर्याय भी बदलती रहती है ।

गुण द्रव्य का हमेशा अन्वय करते हैं

इतना अवश्य है कि गुण तो हमेशा द्रव्य में सदा रहता है, इसलिए गुणों की परिभाषा कही जाती है अन्वयिनो गुणाः। क्या कहा जाता है? गुण वो होते हैं जो द्रव्य का हमेशा अन्वय करते हैं, अन्वय माने द्रव्य के साथ रहते हैं, द्रव्य से कभी भी अलग नहीं होते हैं। तो गुण तो हमेशा द्रव्य के साथ रहने वाले अन्वय रूप होते हैं और पर्याय जो होती है वो व्यतिरेकिणो पर्यायाः। व्यतिरेकिण: पर्यायाः ऐसा कहा जाता है, तो जो व्यतिरेकी है वो पर्याय है, भिन्न भिन्न होती रहती हैं पर्याय, कैसी होती हैं, भिन्न भिन्न स्वभाव वाली भी होती हैं, भिन्न भिन्न समय पर बदलती भी रहती हैं और भिन्न भिन्न समय पर भिन्न भिन्न रूप से उत्पन्न भी होती रहती हैं, तो पर्यायें हमेशा व्यतिरेक स्वभाव वाली हैं, एक के बाद एक पर्याय, एक के बाद एक पर्याय, ऐसी उनकी पर्यायों की परिणति भी क्रम से होती रहती है, क्योंकि पर्यायें एक स्वभाव वाली पर्यायें कभी भी एक साथ अनेक नहीं रहेंगी, या एक गुण की पर्याय अनेक नहीं रहेंगी। एक गुण की एक पर्याय रहेगी, एक द्रव्य की एक पर्याय रहेगी, जब वह पर्याय समाप्त हो जाएगी, तभी दूसरी पर्याय उत्पन्न होगी, इसलिए पर्यायों को क्रम वर्तिनः पर्याय भी कहा जाता है, क्या कहा जाता है? क्रम वर्तिनः पर्यायः पर्यायों का एक लक्षण और भी आचार्यों ने क्या कहा, पर्याय कैसी होती हैं? क्रमवर्ती, मतलब, एक successive order में जो है, उन पर्यायों का जो है, निकलना होता है, तो वो पर्यायें क्रम क्रम से उत्पन्न होती हैं क्योंकि एक साथ सभी पर्यायें उत्पन्न नहीं हो सकती हैं, किसी भी द्रव्य में नहीं होती। जीव द्रव्य की पर्याय है, मान लो मनुष्य पर्याय है तो एक समय पर एक ही पर्याय रहेगी। जब मनुष्य पर्याय होगी तो देव पर्याय नहीं होगी, देव पर्याय होगी तो मनुष्य पर्याय नहीं होगी, तो इसी को बोलते हैं क्रमवर्ती, एक क्रम पूरा होगा, उसके बाद ही अगली पर्याय का क्रम शुरू होगा, तो इसको क्रमवर्ती पर्याय कहते हैं। पुद्गल में भी इसी तरीके से चलता है, आपको आम का उदाहरण दे करके समझाया जा रहा था, जैसे उसमें हरापन है, पीलापन है, तो ये सब उसकी गुणों की पर्यायें हैं, जो वर्ण गुण है, उस वर्ण गुण की पर्यायें हैं, तो जो उसमें वर्ण गुण की पर्याय जिस समय पर हरापन है तो हरा पर्याय है, पीलापन है तो पीली पर्याय है, तो उसमें ये पर्यायें भी क्रम क्रम से बदलती हैं। हर द्रव्य में जो भी पर्याय जिस तरह का जो द्रव्य बना है, सफेद है, चिकना है, किसी भी तरह का कोई भी गंध इत्यादि को लिए हुए है तो उसमें एक समय पर उसकी एक ही पर्याय होती है।

आगम के अनुसार पर्याय क्रमवर्ती होती हैं क्रमबद्ध नहीं**:-**

अब वो पर्यायों को क्रमवर्ती कहने से बहुत से लोग confused हो जाते हैं, कहते हैं, पर्यायें तो! क्या होती है? क्रमवर्ती की जगह पर लोगों ने क्रमबद्ध कर दिया, क्या कर दिया? क्रमबद्ध, समझ आ रहा है ना? पर्यायें क्या होती हैं? क्रमबद्ध पर्यायें होती हैं, तो क्रमबद्ध करके वो उसके व्याख्यान में कि जैसे वो क्रम से बंधी हुई हैं। इसके बाद यही होगा, इसके बाद यही होगा, इसके बाद यही होगा, तो क्रमबद्ध पर्यायों को एक जो है, अलग तरीके से बताया जाने लगा, उनकी अलग अपनी theory बना ली और उसको सिद्ध करने के लिए भगवान की सर्वज्ञता का सहारा भी मिल गया, क्योंकि सर्वज्ञ भगवान है ना, तो उन्होंने

भविष्य की सब पर्यायें भी देख रखी हैं, क्योंकि हम बोलते हैं, भूत भावी भवतः पर्यान सदा सर्वदः, तो भूत-भविष्य-वर्तमान की सब पर्यायें भगवान जानते हैं, तो वो सब जान रहे हैं, तो वो जान वही रहे हैं जो पहले से हो रही हैं, तो बस उनके ज्ञान में दिख रही है तो वो सब fix हो गई, तो इस तरीके की अपने मतलब की theory बना करके एक क्रमबद्ध पर्याय करके किताबें वग़ैरह भी निकलने लग गईं। जबकी इस तरह से पर्याय के विषय में क्रमबद्धता को सिद्ध करने का कहीं कोई आचार्यों का किसी भी तरह का ना कोई अभिप्राय रहा, ना कोई कभी भी ऐसा उल्लेख रहा, किन्ही भी पूर्वाचार्यों ने क्रमबद्ध पर्याय नाम से कोई शब्द ही नहीं कभी लिखा। ये वर्तमान के कुछ ज्यादा पढे लिखे विद्वानों ने, क्रमबद्ध शब्द डाल करके एक बहुत बड़ा बखेड़ा खड़ा कर दिया और उसकी सिद्धि के लिए उन्होंने भगवान की सर्वज्ञता का सहारा ले लिया, तो ये चलो ये बातें तो बाद की हैं, समझाने की, फिर कभी समझाएंगे, तो कुल मिला करके ये सब जो है ये एक तरीके का बखेड़ा है, बखेड़ा समझते हो ना, विवाद करने के तरीके हैं, एक तरीके से अपनी बस line अलग बनाने के, कुछ अपने सिद्धांत अलग बनाने के, ये तरीके हैं।

तो पर्यायें क्रमवर्ती होती हैं, आपको समझना क्या है, जो आचार्यों ने लिखा है, जो पंडित कहते हैं उनकी बातों में नहीं पड़ना। पर्यायें कैसे होती हैं? क्रमवर्ती होती हैं, तो कर्मवर्ती जो पर्याये हैं, उसका मतलब ये है कि एक गुण वाली जो पर्याये हैं वो पर्याये एक गुण की एक ही पर्याय होगी जब वो पर्याय पूरी हो जाएगी, या उसकी अवधि पूरी होगी, तभी वो दूसरी पर्याय उत्पन्न होगी, एक गुण की एक साथ बहुत सारी पर्यायें नहीं होती, इसलिए वो क्रम क्रम से होती रहती हैं, ये उसका अर्थ है, तो कभी भी हम द्रव्य के परिणमन को देखेंगे तो इसमें इसी तरीके से क्रमवर्तीपना रहता है, हर चीज में रहता है, मान लो हम बालपने से युवा हुए, युवा से हम वृद्ध हो रहें, तो ये भी सब पर्यायें ही है, पर्याय में भी पर्यायों का भेद हो जाता है, चूँकि वह अनेक प्रकार के द्रव्य के समूह के साथ चल रही हैं, ये पर्याय, जो व्यंजन पर्याय है, तो वो अनेक द्रव्यों का उसमें समूह है, तो वह समूह भी जो है वह अनेक तरह की परिणतियों को लेता रहता है, तो जब बालपने की ये पर्याय कहलाएगी, क्या कहलाएगी? जब बालपन रहेगा तो युवापन नहीं रहेगा, युवापन होगा तो बालपन नहीं होगा, जब युवापन होगा तब वृद्धपन नहीं होगा, वृद्धपन होगा तो युवापन नहीं होगा, तो ये पर्याय धीरे धीरे धीरे जो बदल रही हैं वो उसके क्रम के अनुसार है, ये क्रमवर्ती हैं। अब इसको क्रमवर्ती कहना तो आचार्यों की परंपरा के अनुकूल है, लेकिन क्रमबद्ध कहना ये अनुकूल नहीं है।

Class 44

पर्याय क्रमवर्ती होती है **fix** नहीं

बद्ध में तो क्या होता है, हमने उसको बाँध दिया, माने इसके बाद यह ही होगा, यह ही पर्याय उत्पन्न होगी, इस पर्याय के बिना और कोई दूसरी पर्याय आप नहीं कर सकते हो, तो ऐसा क्रमबद्धपना किसी भी द्रव्य में नहीं होता। पर्यायें किसी भी द्रव्य में होंगीं तो क्रमवर्ती होंगीं, जैसे मान लो, उदाहरण के लिए, आप अगर किसी मिट्टी के लोंदे से कोई भी घड़ा बनाने के लिए तैयार हुए, क्या बनाना है? मिट्टी के लोंदे का क्या बनाना है? घड़ा बनाना है, तो घड़ा बनाने के लिए अब आप को मिट्टी के लोंदे को उस चाक पे चढ़ाना पड़ा, लोंदा बनाया, चाक पे चढ़ाया उसको आकार दिया, अब आकार देते हुए ये fix नहीं है कि हम उस मिट्टी में घड़ा ही बनाएँगे, समझ आ रहा है ना, घड़ा बनाते बनाते हमारे मन में विचार आया हम घड़ा नहीं बनाते हम तो सुराई बना लेते हैं, तो बस उस कुम्हार का विचार बदला, उस मिट्टी की पर्याय उस घड़े की तरह ना हो करके सुराई की तरह हो गई, उसके मन में आया नहीं सुराई भी नहीं बनाते इस मिट्टी का बड़ा सा गमला बना लेते हैं तो उसने गमला बना दिया, तो अगर द्रव्य की पर्याय fix हो जाएगी कि इस मिट्टी में से घड़ा ही बनना है तो फिर कुछ नहीं बनेगा, हम उसको परिवर्तित ही नहीं कर पाएँगे, तो परिवर्तित भी होती हैं। द्रव्य में पर्याय निकलेगी, एक पर्याय होगी तो एक ही होगी, चाहे कुछ भी बना लो और जब एक होगी तो दूसरी नहीं होगी।

क्रमबद्ध में परिवर्तन संभव नहीं

अब घड़ा होगा तो सुराई नहीं होगी ,सुराई होगी तो घड़ा नहीं होगा, घड़ा होगा तो गमला नहीं होगा, गमला होगा तो घड़ा नहीं होगा, ये क्रमवर्ती होगी, पहले चाहे तुम घड़ा बना लो फिर फोड़ दो उसको, फिर पानी मिला लो, फिर बना लो फिर सुराई बना लो, तो द्रव्य की पर्याय इसलिए क्रमवर्ती कही गईं है, जो चीजें हमे प्रत्यक्ष देखने में आ रही हैं, जिनमें हम परिवर्तन लाते हैं, वो क्रमबद्ध तरीके से नहीं परिवर्तन संभव है, वो क्रमवर्ती में परिवर्तन संभव होता है, क्रमबद्ध में परिवर्तन नहीं होता है, सुन रहे हो, तो कोई भी चीज जो हमारे लिए प्रत्यक्ष प्रमाण से घटित होती है वही चीज सत्य होती है, तो जिस तरह से पुद्गलों की पर्यायें हम अपने अनुसार ढालते है, ढालते है कि नहीं ढालते हैं? लोहा बना लिया, अब लोहे का हम कुछ भी बना सकते हैं, लोहे का कोई angle बना सकते हैं, लोहे की कोई plate बना सकते हैं, लोहे का कोई pipe बना सकते हैं, stand बना सकते हैं, कुछ भी बना सकते हैं, तो उसकी जो पर्याय है वह एक पर्याय एक time पर होगी उसके बाद ही दूसरी पर्याय को हम परिवर्तित कर पाएँगे, ये क्रमवर्तीपने में ये सब घटित हो जाता है, तो इसी तरीके से जीव के साथ होता है, कि जब जीव की कोई पर्याय है, चाहे वो बाल पर्याय हो, चाहे वो युवा पर्याय हो, वो चाहे वृद्ध पर्याय हो, अथवा मनुष्य पर्याय हो या देव पर्याय हो। वह पर्याय जैसी बन रही है वह उसके अनुसार बन तो रही है, उसमें परिवर्तन भी वो लाता है, समझ आ रहा है, परिवर्तन भी उसके अंदर आता है। बाल अवस्था में भी परिवर्तन होते हैं, युवा अवस्था में भी परिवर्तन होते हैं,

अगर हम ध्यान ना रखें तो बहुत जल्दी क्या हो जाता है, पर्याय जो बाल अवस्था की है या युवावस्था की है, बहुत जल्दी मिट भी जाती है, नहीं समझ आया, अगर हम युवावस्था की पर्याय है उसको ध्यान ना रखें तो बहुत जल्दी वृद्धावस्था की भी हो जाती है, कोई भी पर्याय है, अगर उसके विरुद्ध काम रहे हैं तो बहुत जल्दी उसकी परिणति दूसरे रूप में दिखाई देने लग जाती है, समझ आ रहा है ना, कुछ लोग जैसे देखते हो ना, युवा होते हुए भी कुछ लोगों के बहुत जल्दी से क्या होते है, बाल झड़ गए, बहुत जल्दी एकदम बूढ़े बूढ़े से दिखने लग गए, बहुत जल्दी ज्यादा मेहनत कर ली, या ज्यादा काम में लग गए, खाने-पीने पे ध्यान नहीं दिया पर्याय, क्या गई? घिस गई, कमजोर हो गई, तो बहुत जल्दी वो बुढ़ापे के रूप में दिखने लग गई, उसी को सम्भाल के रखता, थोड़ा ध्यान रखता तो वो सम्भाल के चलती तो समय पर आती वो पर्याय वृद्धावस्था की, तो बन्धा हुआ कुछ नहीं है, बन्धा हुआ तो जो लोगों ने बाँध रखा है उन्होंने तो सर्वज्ञ की सर्वज्ञता का सहारा ले करके उसको जबरदस्ती बाँधने की कोशिश की है, तो कभी भी आचार्यों ने ये नहीं कहा की पर्यायें बंधी होती हैं, ये क्रमबद्ध पर्याय आगम का शब्द ही नहीं है, क्या कहा जा रहा है? ये आगम का शब्द ही नहीं है, इसलिए जो लोग इन फ़िज़ूल की बातों में पड़ते हैं, वो अपना भी दिमाग खराब करते हैं और कभी कभी मेरा भी दिमाग खराब करने आ जाते हैं। महाराज ये क्रमबद्ध पर्याय क्या होती है? भला क्या होती है? कुछ होती हो तो बताऊँ, कुछ होती ही नहीं तो क्या बताऊँ? समझ आ रहा है ना, तो आप लोग इस तरीके के बेवजह के झंझटों में ना पड़ा करें, ना सुना करें और जो सुना रहे होते हैं तो उनकी बात उन्हीं के लिए समर्पित करके आप वहाँ से चले आया करें, समझ आ रहा है ना।

आचार्यों के अनुसार पर्याय परिवर्तन सहित क्रमवर्ती होती हैं:-

क्रमवर्ती पर्याय, आचार्यों का जो शब्द है वो मैं बता सकता हूँ, वो क्या है, क्रमवर्ती पर्याय, तो क्रमवर्ती का अर्थ समझ गए ना? सब चीजें अपने अपने क्रम क्रम से ही होती हैं, क्योंकि जैसे कोई भी पर्याय है तो पर्याय का एक स्थूल पर्याय तो उसमें कोई ना कोई एक आकृति होगी, आकृति एक समय पर एक ही होगी। हमने मान लो कोई भी पुद्गल को एक square form में बना लिया, तो वह square कहलाएगा, अगर हमने उसको triangle बना दिया तो triangle कहलाएगा, अगर हमने उसको rectangle दिया तो rectangle कहलाएगा, globe बना दिया तो globe कहलाएगा, तो one mode at one time, एक बार में उसकी एक ही परिणति एक ही shape हम उसको दे पाते हैं। हम उसकी shape को change कर सकते हैं इसलिए उसको क्रमवर्ती कहा गया है, तो क्रमबद्ध होने का मतलब तो ये हो जाता है कि जो बस बन्ध गया वो बन्ध गया, इसके बाद यही होना है, you can never change it, ये क्रमबद्ध हो गया। क्रमबद्ध होते हुए भी ये क्रमवर्ती है, अब जो उम्र मिली है तो वो आयु कर्म के साथ चल रही है, तो ये तो क्रमवर्ती है, कि बालपने से युवापन आएगा, युवापने से वृद्धपन आएगा। इसको हम क्रमबद्ध नहीं कहेंगे, बद्ध में ये होता है की जो पर्याय बालपने की निकल रही है वो वैसेही निकलेगी जैसी बंधी हुई है, तो ऐसा

नहीं होता है, हम उसमें परिवर्तन भी ले आते हैं। अब पर्याय बन रही थी हमने उसकी मृत्यु करा दी, कहाँ गई पर्याय अब वो? वो बालपन से युवापन तक पहुँच ही नहीं पाया, उसकी असमय में मृत्यु करा दी हमने, तो कहाँ गई पर्याय अब? तो बंधी होती तो वो जरूर निकलती, वो बंध के अलावा जाती कहाँ वो? तो ऐसे, जो हो रहा है वो भी बालपन से युवापन होते हुए भी उसको क्रमबद्ध नहीं कहेंगे, वो क्रमवर्ती है, ये नियम ही है, क्योंकि जिसका जन्म हुआ है तो वो बाल से युवा बनेगा, युवा से वृद्ध होगा, वृद्ध से मरण को प्राप्त होगा, तो ये उसका क्रम है, तो ये क्रम आयु कर्म के साथ बंध जाता है, ये आयु कर्म के साथ इसी क्रम से बन जाता है। पुद्गलों में परिणमन शरीर का वैसे ही आयु कर्म के साथ में होता रहता है, तो ये क्रमवर्ती में आता है इसको हम क्रमबद्ध नहीं कहेंगे, कि बालपन से युवापन है तो क्रमबद्ध हो गया उसके बाद युवापन आएगा ही, जरूरी है क्या? युवापन आएगा ही, आने ही ना देंगे हम युवापन, पहले ही मिटा दिया हमने उसको, तो ये बद्ध कहाँ हुआ? है ना, या आ रहा है तो आते हुए भी जो है वो अपनी एक जो speed से आ रहा है, उस speed को भी हम जो है maintain करते हैं, उसको भी maintain करने के तरीके होते हैं, तो वो जो हम अगर बद्ध होगा, तो फिर उसको कुछ भी कर नहीं सकेंगे, वो तो जैसा होना है वैसा ही होता है। ऐसा कुछ भी नहीं होता है, सुनो अभी सिर्फ सुनो, जो दिखाई दे रहा है, वो सब को दिखाई दे रहा है।

कुछ उदहारण को देकर सिद्धांत से खिलवाड़ उचित नहीं

भामंडल, सर्वज्ञ ज्ञान आदि के उदाहरण में भी सब दिखाई दे रहा है, जब सर्वज्ञ की बात आएगी तो हम सर्वज्ञ की बात भी बताएँगे, तो इन चीजों का सहारा ले करके गलत बातें जो प्रस्तुत की जाती हैं, वो गलत हैं, तो ऐसा कोई स्वरूप नहीं हैं पर्यायों का, कि ये क्रमवर्ती हैं, कि सब fix हैं, कि दो-चार उदाहरण पकड़ लिए, कि वो जो नेमिनाथ भगवान ने द्वारिका जलते हुए देखी, कि द्विपायन ने वो जला दिया, तो बस ये एक दो उदाहरण पकड़ करके, इन सब उदाहरणों की माध्यम से बस अपनी मन गढ़ंत बातें उसमें डाल करके और अपना नया सिद्धांत बना करके लोगों को बरगलाना, समझ आ रहा है ना? तो उदाहरण सब तरीके के होते हैं, ये विषय अभी चर्चा में ज्यादा फैल जाएगा, सिर्फ इतना ही समझो, साधु की बात पर, आगम की बात पर, इतना समझो कि जो बात गलत है, वो गलत है और जो बात सही है वो सही है। आचार्यों के द्वारा जो बात कही गई है उसे सत्य मानो, जो पंडित, कोई भी तरीके के कपड़े वाले कुछ भी बोलते रहते हैं, उन बातों का यकीन प्रामाणिकता की कसौटी पर कस करके ही करना चाहिए, अन्यथा उन्हे झूट का पुलिंदा समझ करके छोड़ देना चाहिए, सीधी सी, सौ टके की एक बात, तो इसी तरीके से आपको क्रमबद्ध पर्याय ये सौ टके की एक बात बोल रहा हूँ, कि ये आचार्यों का शब्द नहीं है, बस बात ख़त्म, किन्ही भी आचार्यों के द्वारा ये कहा हुआ, कहीं पर उल्लेखित शब्द ही नहीं है ये, क्रमबद्ध पर्याय। जो शब्द है वो मैं बता रहा हूँ। अब उसमें अपने दिमाग लगाओ और दूसरों का दिमाग घुमाओ, तो तुम्हारा दिमाग अगर घूम चुका है तो उसको बिल्कुल ठीक ना कर पाओ, तो ये तुम्हारी कमजोरी है, तुम्हारा भाग्य

है, कुछ लोगों के दिमाग जो इसमें पक जाते है ना, जो सुन सुन करके या जिसमें जैसे रम जाते हैं तो उन्हे फिर घुसता ही नहीं है फिर उनके दिमाग में, चाहे मैं बोलू, चाहे भगवान तीर्थंकर भी बोलेंगे तो भी नहीं घुसेगा वो, क्योंकि उनकी पर्याय वैसी बन चुकी है, वो परिणती वैसी बन चुकी है, उनके कर्म वैसे बन चुके हैं, उन्हे कुछ समझ नहीं आएगा, तो उनके साथ माथा पच्ची करके अपना time खराब नहीं करना।

गलत को सही सिद्ध करने की अकल सब में है

तो समझना क्या है, पर्याय कैसी होती है? क्रमवर्तीनः पर्यायः ये आचार्यों का सूत्र है, बीसों जगह लिखा मिल जाएगा। किसी भी तरह के reference देखने के लिए कहीं भी कोई शास्त्र उठा लेना मिल जाएगा और क्रमबद्ध पर्याय ये कोई आचार्यों का सूत्र नहीं है, बस बात खत्म। जो बात आगम में कही गई है वो बात हमें रखना है उसी को समझना है और उसी के अनुसार अपनी बुद्धि को बनाना है, सुन रहे हो कि नहीं, बाकी बातें बाद की, समझाने के लिए तो आदमी कुछ भी समझा सकता है, सब अपने अपने दुनिया के ३६३ मत क्यों हो जाते हैं? उन्हे ३६३ मतों को भी ३६३ तरीके से हर एक बात को सिद्ध करने की अकल होती है कि नहीं होती है? तो बस, तो उससे मतलब नहीं है, मतलब किससे है? जो सत्य क्या है, अनेकांत क्या है, भगवान के द्वारा बताया हुआ क्या है और आचार्यों के द्वारा लिखा हुआ क्या है? सत्य वो है। ३६३ मत वाले भी हर बात को अपने अपने तरीके से घुमा घुमा के सब सिद्ध करते हैं। दूर की बात नहीं है, अगर बुद्ध मत के पास चले जाओगे तो अनित्य, अनित्य, अनित्य को ही सिद्ध कर देगा वो, तुम कुछ भी उसकी सिद्धि नहीं कर पाओगे, तो अपन लोगों में इतना दिमाग नहीं होता खास तौर से आप लोगों में तो बिल्कुल भी नहीं होता, फिर भी अपने आप को दिमाग वाले मानते रहते हो, इसीलिए जो थोड़े बहुत दिमाग वाले होते हैं, वो तुम लोगों की अज्ञानता का फायदा उठाते रहते हैं, बस ये दो चार महिलाएँ बैठ गईं, उनको कुछ भी भर दिया, कुछ भी सिखा दिया, दो-चार ने कुछ दो-चारों को और बरगलाया, बस ऐसेही काम चला रहता है, तो क्या सीखना, पर्याये कर्मवर्ती होती है और गुण अन्वयी होते हैं, बस इतना सीखना ज्यादा दिमाग में कूड़ा भरने की जरूरत नहीं हैं।

कालश्च **||5.39||**

काल द्रव्य एक प्रदेशी स्वयं अपना स्वतंत्र अस्तित्व रखने वाला द्रव्य है**:-**

कालश्च, अब देखो बात आती है काल की, हाँ, काल भी एक द्रव्य है, बहुत पहले से कहते चले आ रहे थे, द्रव्याणि नित्यावस्थितान्यरूपाणि ये सब सूत्र इसमें fit हो जाएँगे, च शब्द से सब fit कर लो, ठीक है ना, उत्पाद व्यय ध्रौव्य युक्तं सत्, सत् द्रव्यस्य लक्षणम्**,** तद्भावाव्ययं नित्यम्, है ना नाणोः, काल भी जो है एक प्रदेश वाला है, इस तरीके की सभी चीजें, इसमें fit हो जाती हैं। कालश्च तो काल भी एक द्रव्य है और ये द्रव्य कैसा है? अब इसके स्वरूप के बारे में यहाँ पर तो कोई detail नहीं बताई, लेकिन जो अन्य

पंचास्तिकाय, द्रव्य संग्रह, आदि ग्रंथ हैं उनमें काल द्रव्य के लिए, कि यह भी लोकाकाश के एक एक प्रदेश पर स्थित, एक एक अणु के रूप में एक प्रदेशी वाला, स्वयं स्वतंत्र एक अपने अस्तित्व को रखने वाला एक अलग द्रव्य है, तो जितने लोककाश के प्रदेश हैं उतने ही कालाणु हैं और उतने ही कालाणु एकएक द्रव्य है यानि अंसख्यात द्रव्य रूप ये कालाणु पूरे लोकाकाश पर व्यवस्थित है, तो ये काल द्रव्य भी जो है देखा जाए, तो जो निश्चय और व्यवहार काल था, उसके बारे में आपको बताया था, जो ये स्वरूप बताया तो वो ये निश्चय काल का स्वरूप, जिसे परमार्थ काल का स्वरूप कहते हैं, ये किसका स्वरूप है? निश्चय काल का, परमार्थ काल का और जो व्यवहार काल होता है, उसको तो हम गणना करके बनाते हैं, तो उसके लिए आगे का सूत्र आ रहा है -

सोऽनन्त-समयः **||5.40||**

व्यवहार काल अनंत समय वाला है। अनंत समय का मतलब हो गया समय को जोड़ते चले जाओ, अनंत तो कहीं पर भी आप वर्तमान का कोई क्षण देखोगे उसकी अपेक्षा से past भी अनंत है और future भी अनंत है,

Class 45

व्यवहार काल अनंत समय वाला है**:-**

फिर भी जो past है उससे future कई गुणा अनंत होता है, तो ये भी जो है अनंत, जो यहाँ कहा गया ये समुदाय है, समूह है, व्यवहार के जो समय हैं उनको एकत्रित करके इसको यहाँ पर अनंत समय रूप कहा गया है। तो काल द्रव्य अनंत समय वाला है और उन अनंत समयों में ही सब गणनाएँ हो जाती हैं, जो हम भी गणनाएँ करते है, संख्यात वर्षों की, असंख्यात वर्षों की, तो समय तो उसमें अनंत हो ही जाते हैं, जब एक आवली में ही असंख्यात समय हो जाते हैं, अगर हम समय को गणना करेंगे तो समय तो अनंत रूप में इकट्ठा हो करके ही कहा जा सकता है तो इसलिए यहाँ पर इतना ही कह करके छोड़ दिया गया कि काल के समय अनंत हैं यानि present के अलावा अगर हम देखेंगे तो past और future दोनों ही जो हैं अनंत रूप हैं, future का भी कोई अंत नहीं है और past का भी कोई अंत नहीं है। Time कहीं से शुरू नहीं होता, time को कोई शुरू नहीं कर सकता है, time की कोई beginning नहीं, जैसे space की कोई beginning नहीं वैसे ही time की भी कोई beginning नहीं, तो जो भी चीजें हैं, जो time से related हैं, वो हमेशा रही हैं और रहती हैं। इस कारण से वो चीजें भी beginning less time वाली कही जाती हैं,

क्योंकि जब time ही beginning less है तो time से जुड़ा हुआ जो द्रव्य होगा वो भी beginningless होगा, है ना, क्योंकि इसमें भी उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य चल ही रहा है,

उत्पाद के प्रकार

ध्रौव्य तो उसका अपना नित्य स्वभाव बना रहना ही ध्रौव्य हो गया, उत्पाद उसके अंदर जो प्रतिसमय अब उसमें भी अगुरूलघु गुण के कारण से जो षटगुणी हानी-वृद्धि होती है वो तो द्रव्य का स्वभाव है, सामान्य स्वभाव है तो उस स्वभाव के कारण से उसमें उत्पाद निरंतर चलता रहता है, तो ये कहलाता है उत्पाद दो प्रकार का होता है, एक स्व-उत्पाद एक पर प्रत्यय से होने वाला उत्पाद, तो जब स्व-उत्पाद होता है, तो वो तो अपने अगुरुलघु गुण के परिणमन से स्वयं हो रहा है और पर प्रत्यय से होने वाला उत्पाद है, जो वो द्रव्यों के परिणमन के कारण से उस काल को पकड़ लिया जाता है, ये चतुर्थ काल हो गया, ये पंचम काल हो गया या यह एक हजार वर्ष का काल हो गया, ये दो हजार वर्ष पुराना हो गया, तो हमने उस द्रव्य के कारण से उस काल को पकड़ लिया। काल कभी एक हजार वर्ष पुराना नहीं या दो हजार वर्ष पुराना नहीं है, उस विशेष द्रव्य की अपेक्षा से हम देखते हैं, कि ये द्रव्य एक हजार वर्ष से ऐसा बना हुआ है, तो ये द्रव्य के कारण से उस काल को कहा जाता है एक हजार वर्ष का काल हो गया, लेकिन काल तो अनंत समय वाला है, तो उस काल के ऊपर भी जो उत्पाद आ रहा है या व्यय आ रहा है, यह भी उसकी जो परिणतियाँ हैं वो परप्रत्यय से भी होती है। द्रव्य के कारण से, पर द्रव्य के कारण से उस काल के ये परिणमन परप्रत्यय से माने जाते है, तो स्व-प्रत्यय से भी उत्पाद होता है और परप्रत्यय से भी उत्पाद होता है, इस तरह से हम इस काल में भी जान सकते है, जीव पुद्गल में भी इस तरह से स्व और पर प्रत्यय संबंधी उत्पाद होते हैं, ये भी इस तरह से समझ सकते है।

द्रव्याश्रया निर्गुणा: गुणा: **||5.41||**

गुण और पर्याय के समूह का नाम द्रव्य है

क्या कहते है, अब द्रव्य की तो बहुत बात हो गई, थोडी सी गुण की भी बात कर लेते है, तो गुणों का एक गुण यह है, कि निर्गुण: उनमें कोई गुण नही होता, इसका मतलब क्या हुआ? गुण निर्गुण होते हैं, एक तो ये उनका गुण हो गया और दूसरा गुण क्या हो गया? द्रव्याश्रया द्रव्य के आश्रय रहते है, द्रव्य के आधार से रहते है, द्रव्य ही उनका आधार होता है, गुण आधेय होते है, ये समझाने के लिये है फिर भी ऐसा नही समझना, कि जैसे यह टेबल के आधार पर यह कागज रखा हुआ है, तो टेबल पहले थी, कागज बाद में आया, ऐसा आधार आधेय संबंध नहीं है वैसा ही है जैसे तिल में तेल होता है। जब तिल बना तब तेल भी उसमें व्यापक हो करके उसके अंदर है और ये ही आधार आधेय संबंध जो होता है ये स्वाभाविक संबंध कहलाता है, तो गुणों का भी द्रव्य के आश्रय से इस तरह का ही आधार आधेय संबंध जानना। ज्ञान दर्शन

आदि जीव के गुण हैं, चैतन्य आदि ये जीव के गुण हैं, ये सभी उस जीवद्रव्य के आधार से हैं और कहीं कहीं अगर हमको ये भी समझ ना आए तो आचार्यों ने ये भी लिखा है कि गुणाणां समूहो द्रव्या: अथवा पर्यायाणां समूहो द्रव्या: गुणों का जो समूह हो गया उसी का नाम द्रव्य हो गया अथवा जो त्रिकालवर्ती पर्याय हैं उन सबका समूह जोड लो द्रव्य आ गया, क्योंकि द्रव्य बिना पर्याय के नही होता, द्रव्य बिना गुण के नहीं होता, तो जो गुणों का समूह है उसी का नाम द्रव्य भी है तो गुणों का आधार द्रव्य है, ये जरूर ध्यान में रखना है, कि द्रव्य गुण के आधार से नही है, गुण द्रव्य के आधार से है

एक द्रव्य के आश्रय से अनंत गुण रहते हैं:-

क्योंकि एक द्रव्य है, द्रव्य तो एक है, उसमें गुण अनंत है तो एक द्रव्य अनंत गुणों को धारण कर लेता है, तो एक द्रव्य के आधार से अनंत गुण हैं, एक द्रव्य का आश्रय लेकर के अनंत गुण हैं और वो सब गुण निर्गुण सिर्फ इस अपेक्षा से कहे गए है, कि उनमें जो गुण है बस वही गुण है, बस उसके अलावा वो दूसरा गुण नही लाएँगे अपने अंदर, इसलिये वो निर्गुण हैं नही समझे, अब जो ज्ञानगुण होगा वो ज्ञानगुण ही रहेगा, अब ज्ञान कभी दर्शन गुण नहीं हो जाएगा, दर्शन गुण है वह दर्शन गुण ही रहेगा, वो दर्शन ज्ञान गुण नहीं हो जाएगा, तो ये उनका निर्गुणपना है, कि उसमें और कोई दूसरा गुण नहीं होगा, है ना, तो ये गुण भी उनके विशेष गुणों की अपेक्षा से है तो यह जो अनेक द्रव्यों के अंदर अपने अपने अलग अलग जो गुण हैं उनमें सब गुण अपने अपने अलग अलग अस्तित्व के साथ और अपनी अपनी विशेषता के साथ रहते हैं इसलिए सामान्य गुण होंगे वो सामान्य गुण की तरह रहेंगे, विशेष गुण हैं वो विशेष गुण की तरह रहेंगे। सामान्य कभी विशेष नहीं बनेंगे, विशेष कभी सामान्य नहीं बनेंगे, यही इनका निर्गुणपना है और ये सब हैं द्रव्य के ही आश्रय से, तो द्रव्य के आश्रय से क्या होता है? गुण रहते है और वह गुणों से स्वयं रहित भी होते हैं, ठीक है,

आचार्य ज्ञानसागर जी महाराज ने नीति से द्रव्य का अर्थ धन कहा

आचार्य महाराज जब इस सूत्र का अर्थ पढ़ाते हैं तो बताते हैं, कि जो गुरुणांगुरु आचार्य ज्ञानसागरजी महाराज इसका एक अच्छा अर्थ करते थे, नीति के रूप में, देखो, द्रव्य के आश्रय से, द्रव्य माने क्या होता है? द्रव्य मतलब धन होता है। इस सूत्र का अच्छा एक नीतिपरक अर्थ भी बड़ा अच्छा बैठता है। द्रव्य माने क्या होता है, हाँ, धन, पैसा इसको द्रव्य बोलते हैं, देखो, द्रव्य के आश्रय से निर्गुणी भी गुणी बन जाता है, द्रव्य के आश्रय से निर्गुणा गुणाः तो ये संस्कृत को जानने वाले इस तरीके से सूत्रों के भी अपने थोड़ा सा अच्छा अर्थ नीतिपरक भी निकाल लेते हैं, तो ये ज्ञानसागर जी महाराज जो हैं ना, संस्कृत के प्रकांड विद्वान थे तो इसलिए जो है वो जो इस तरीके से भी इसका अर्थ निकालते थे, भैया कि द्रव्य हो तो निर्गुणा, वो वास्तव में बात भी सही है। कितना ही निर्गुण आदमी हो वो गुणवान हो जाता है, तो यही जो है इस तरीके की जो परिणतियाँ आती हैं ये जो है, कोई भी ना कोई तरीके का गुण अगर नहीं है, चलो धन

ही है तो चलो बहुत कुछ है इसलिए सब धन के पीछे पड़े रहते है, तो हर द्रव्य के अपने जो गुण होते है वो गुण तो कभी भी छूटते नहीं है, तो ये गुणों की परिभाषा है,अब गुणों का जो वर्णन है वो आपको पहले बता ही दिया है। अब इसी तरीके से -

तद्भावः परिणामः **||5.42||**

पर्याय द्रव्य के अनुसार ही शुद्ध या अशुद्ध होती है**:-**

ये पर्याय के लिए आया है, ये सूत्र, गुण किसे कहते हैं? तो ये पहले सूत्र में बता दिया और पर्याय किसे कहते है? तो तद् भावः परिणामः जो उसका भाव है वो भाव बना रहना उसी तरीके का परिणाम होता है। परिणाम माने पर्याय होती है, मतलब परिणमनं पर्यायः जो परिणमन हो रहा है वही उसकी पर्याय होती है, तो पर्याय अगर स्वभाव भूत शुद्ध द्रव्य है तो उसकी पर्याय उसी रूप में होगी, उसी भाव की होगी। शुद्ध द्रव्य हो गया, सिद्ध भगवान है, तो उनकी पर्याय शुद्ध पर्याय, शुद्ध भाव वाली शुद्ध पर्याय होगी। अशुद्ध द्रव्य है, तो उसकी अशुद्ध भाववाली अशुद्ध पर्याय होगी। भाव का मतलब यहाँ पर उसी द्रव्य का भाव, माने अशुद्ध भाव के साथ में होने वाला परिणाम याने पर्याय, तो इससे ये भी समझ लेना, तद् भाव**,** तत् माने उसका जो भाव है, उसका माने द्रव्य का, तत् से मतलब क्या है द्रव्य का, तो द्रव्य है जैसा उसका वैसा ही भाव उसका परिणाम होता है। अशुद्ध द्रव्य होगा तो उसकी पर्याय भी अशुद्ध होती है। शुद्ध द्रव्य होता है तो उसकी पर्याय भी शुद्ध होती है, तो ऐसा नहीं होता, कि पर्याय तो अशुद्ध बनी रहे और द्रव्य शुद्ध हो जाए, सुन रहे हो, हाँ, ज्यादा एकांत रूप से अध्यात्म पढ़ने वाले द्रव्य तो त्रैकालिक शुद्ध छे, तो द्रव्य तो उन्होंने शुद्ध बना लिया, अब पर्याय अशुद्ध है, बस पर्याय में अशुद्धी होती है, भाई पर्याय में अशुद्धी कहाँ से आ गई? जब द्रव्य शुद्ध है तो पर्याय अशुद्ध कैसे हो गया? तो ये एकांत, अगर हमने द्रव्य को शुद्ध, एकांत रूप से मान लिया तो फिर आप पर्याय को अशुद्ध कह कर के अनेकांत का सहारा नहीं ले रहे आप अनेकांत को तोड़ मरोड़कर के प्रस्तुत कर रहे हो,

पानी का उदाहरण

अगर द्रव्य त्रैकालिक शुद्ध है तो उसकी पर्याय भी त्रैकालिक शुद्ध होगी। अब जिस अपेक्षा से द्रव्य को त्रैकालिक शुद्ध कहा है वो अपेक्षा तो तुम्हें पता नहीं और शुद्ध शुद्ध कहना शुरू कर दिया, तो वो अपेक्षा अगर द्रव्य में लगेगी तो वो ही अपेक्षा पर्याय में लगेगी, द्रव्य में तो शुद्ध की अपेक्षा लगाओ, पर्याय में अशुद्ध की अपेक्षा लगाओ ये अनेकांत के साथ खिलवाड़ है, समझ आ रहा है ना, पानी है, द्रव्य का रंग जैसा है वैसी उसकी पर्याय है, वैसी उसकी सामने परिणती दिखाई देगी। पानी को आपने लाल कर दिया, अब आप कहो, नहीं पानी तो शुद्ध छे, पर्याय केवल लाल होती है, लाल हो गई, लाल छे, तो ऐसा कैसे हो जाएगा? पानी ही तो लाल हो गया पूरा, जब पानी उसमें लाल हो गया तो द्रव्य ही विकृत हो गया। हम यूँ

थोड़े ही ना कहेंगे कि ये ऊपर ऊपर से थोड़ी थोड़ी लालामी आ गई इसमें, पानी ही लाल हो गया, जब वो पानी सफेद हो जाएगा, तो उसकी पर्याय भी सफेद हो जाएगी उसकी विकृति हट जाए, पानी में जो लालामी आ गई, जिस रंग के कारण से आ गई, वो रंग आप हटा दो, कोई भी उसमें chemical process कर दो, तो रंग हटेगा तो वो ऊपर ऊपर से तो नहीं हटेगा, पूरे द्रव्य से हटेगा। जब द्रव्य से हटेगा, तो उसकी पर्याय शुद्ध होगी, तो द्रव्य भी शुद्ध हो गया, सीधी सी बात है। द्रव्य और पर्याय का इतना सीधा सरल सा गणित है, जो आप देख रहे हो, उसी में हर चीज घटाओ।

जीव द्रव्य में कर्म हैं तो पर्याय अशुद्ध है

जीव द्रव्य है, तो जीव द्रव्य की वर्तमान में जो पर्याय है, ये मनुष्य पर्याय है, ये मनुष्य पर्याय क्यों पैदा हुई जीव में? जीव द्रव्य अगर शुद्ध होता, तो जीव द्रव्य में शुद्ध पर्याय क्यों नहीं पैदा होती, अशुद्ध पर्याय क्यों पैदा होती? जीव में अगर कर्म नहीं होते, अशुद्ध नहीं होता, तो जीव में कर्म mix है कि नहीं? तो जीव द्रव्य अशुद्ध है कि नहीं? अगर अशुद्ध है तो उसकी अशुद्ध पर्याय निकल रही है, द्रव्य की भी और गुणों की भी, गुण भी तो कौन से शुद्ध हुए? अगर गुण शुद्ध पर्याय वाला हो जाएगा तो केवलज्ञान पर्याय प्रकट हो जाएगी, तो जब गुणों की पर्याय भी क्षयोपशम रूप मतिज्ञान के साथ आ रही है, कर्म के साथ ही जनित सुख दुःख वाली आ रही है तो उसकी गुण की पर्याय भी अशुद्ध आ रही है। द्रव्य की जो मनुष्य आदि रूप पर्याय पड़ रही है, ये भी तो अशुद्ध आ रही है, तो द्रव्य कहाँ से शुद्ध रह गया? तो ये द्रव्य की शुद्धता में कभी अशुद्ध पर्याय नहीं निकलती हैं, अशुद्ध द्रव्य में ही अशुद्ध पर्याय है और शुद्ध द्रव्य में शुद्ध पर्याय है। न्याय आलाप पद्धति कभी आप पढ़ोगे तो समझ में आएगा, उसमें ये दोनों नय अलग अलग हैं। शुद्ध द्रव्यार्थिक नय से शुद्ध द्रव्य के शुद्ध गुण और शुद्ध पर्याय होते हैं और अशुद्ध द्रव्यार्थिक नय से अशुद्ध द्रव्य के अशुद्ध गुण और अशुद्ध पर्याय होते हैं। दो सूत्र अलग अलग न्याय आलाप पद्धति में लिखे हुए है, पढ़ना आप!

तो ये वही चीज है, तद् भावः परिणामः परिणाम अर्थात पर्याय जैसी होगी उसका भाव उस द्रव्य के अनुसार होगा। स्वर्ण है तो सोने की सोने रूप पर्याय बनेगी, मिट्टी है तो मिट्टी की मिट्टी रूप पर्याय बनेगी, लोहा है तो लोहे की लोहे रूप पर्याय बनेगी, जैसा द्रव्य होगा वैसी पर्याय बनेगी, तद् भावः परिणामः बस! तो जैनाचार्यों का जो स्पष्ट रूप से जो उल्लेख होता है वो सब जगह घटित होता है। हम उसमें उलझते हैं अपनी अज्ञानता के कारण से या उलझाने वाले ज्यादा मिल जाते हैं तो हम समझते हैं ये ज्यादा ज्ञान की बातें कर रहे हैं, जब की सीधी सी बात है, समझ आ रहा है, तो हमेशा उदाहरण वही दिया गया है, जो हमारे सामने प्रत्यक्ष होता है, इसलिए परिणामों का जो खेल है यहाँ पर परिणाम माने परिणती, परिणमन उसको नाम परिणाम है और ये पर्याय के साथ जोड़ा गया है, तो इतना ही इसका अर्थ है, इस तरह से ये पंचम अध्याय पूर्ण हो जाता है। जिसमें द्रव्य, गुण, पर्याय और अनेक तरह के विश्व के

इस पूरे ब्रह्मांड के अंदर रहने वाले सब तरह के मूर्त-अमूर्त सब द्रव्यों का वर्णन हो जाता है। इतने के साथ में यह अब अजीव द्रव्य का जो वर्णन है, ये समाप्त हो जाता है। षष्ट अध्याय से एक नया वर्ण प्रारंभ होगा, नए तत्त्व के साथ में, देखते हैं।

बोलो महावीर भगवान की जय।